



Study AV Kand 11 Hindi

अथर्ववेद कांड 11 सूक्त 1 ब्रह्मौदनं सूक्त अर्थात् ब्रह्म का भोजन, वैदिक ज्ञान

अथर्ववेद 11.1.1

अग्ने जायस्वादितिर्नाथितेयं ब्रह्मौदनं पचति पुत्रकामा।
सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वा मन्थन्तु प्रजया सहेह।।1।।

(अग्ने) अग्नि, ऊर्जा, ताप (जायस्व) पैदा हो, अभिव्यक्त हो (अदिति) दिव्य शक्तियों की माता (परमात्मा का एक गुण) (नाथित) इच्छा करते हुए (इयम्) यह (ब्रह्मौदनम्) ब्रह्म का भोजन, वैदिक ज्ञान (पचति) परिपक्व होता है (पुत्रकामा) पुत्र (पुत्रियों) की प्राप्ति की कामना करते हुए (सप्त ऋषयः) सात ऋषि अर्थात् सन्त वृत्ति के सात तत्त्व – पांच स्थूल तत्त्व, अहंकार (अस्तित्व का भाव) और महत्त (ब्रह्मण्डीय बुद्धि) (भूतकृतः) कार्य करने में, निर्माण करने में सक्षम (ते) वे (त्वा) आपको (अग्नि को) (मन्थन्तु) मन्थन किया और अपना लिया (प्रजया) प्रजाएँ (सहेह) के साथ (इह) यहाँ।

व्याख्या :-

मनुष्यों को उत्पन्न करने की इच्छा कौन करता है?

परमात्मा का भोजन क्या था?

इस सूक्त का देवता ब्रह्मौदनं अर्थात् परमात्मा का भोजन है।

दिव्य शक्तियों की माता, अदिति (परमात्मा का एक गुण), ब्रह्मण के भोजन अर्थात् वैदिक ज्ञान को परिपक्व करती है, यह इच्छा करते हुए कि अग्नि अर्थात् आग, ऊर्जा और ताप पैदा हो, अभिव्यक्त हो, इसके साथ ही वह पुत्रों (और पुत्रियों) को प्राप्त करने की भी इच्छा करती है।

सात ऋषि अर्थात् सन्त वृत्ति के सात तत्त्व – पांच स्थूल तत्त्व, अहंकार (अस्तित्व का भाव) और महत्त (ब्रह्मण्डीय बुद्धि), जो कार्य करने में और उत्पत्ति करने में सक्षम थे, उन्होंने आपको (अग्नि को) अपनी प्रजाओं के साथ, यहाँ (इस सृष्टि में), मन्थन किया और अपना लिया।

जीवन में सार्थकर्ता :-

लोग यज्ञ क्यों करते हैं और विद्वानों को क्यों आमंत्रित करते हैं?

अदिति सृष्टि की मातृशक्ति है और परमात्मा का एक गुण है। उसने परमात्मा का भोजन सात ऋषि अर्थात् सन्त वृत्ति के सात तत्त्व – पांच स्थूल तत्त्व, अहंकार (अस्तित्व का भाव) और महत्त (ब्रह्मण्डीय बुद्धि), के लिए तैयार किया और उनकी सेवा में प्रस्तुत किया जो वेदों का दिव्य ज्ञान था, जिसे सात ऋषियों ने मन्थन किया और अपनी प्रजाओं के साथ उसका आनन्द प्राप्त किया।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



गृहस्थ जीवन में भी, एक गृहणी भोजन पकाती है, यज्ञ अग्नि का आह्वान करती है और दिव्य विद्वानों को भोजन ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करती है जिससे दिव्य ज्ञान के रूप में उन दिव्य विद्वानों का आशीर्वाद और यज्ञ की प्रक्रिया का आनन्द समूचे परिवार को प्राप्त हो सके।

परमात्मा का ज्ञान सब मनुष्यों के लिए वास्तविक भोजन है जो हमें सृष्टि के प्रारम्भ में दिया गया था और वर्तमान में भी चल रहा है। यह परम्परा सभी मनुष्यों के द्वारा जारी रखी जानी चाहिए। यह दिव्य परम्परा है।

अथर्ववेद 11.1.2

कृणुत धूमं वृषणः सखायोऽद्रोधाविता वाचमच्छ ।
अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवा असहन्त दस्यून् ॥2॥

(कृणुत) निर्माण करता है (धूमम्) धुंआ, तरंगों, कंपन (वृषणः) सुखों की वर्षा करने वाला (सखायः) मित्र (अद्रोघ) बगावत वाली प्रवृत्ति का नहीं (अविता) संरक्षण (वाचम्) वाणी, ज्ञान (अच्छ) लक्ष्य की तरफ गति करना (अयम्) यह (अग्नि) ऊर्जा (पृतनाषाट्) युद्धों, कठिनाईयों और संघर्षों का विजेता (सुवीरः) वीरता में उत्तम (येन) जिसके द्वारा (देवाः) दिव्य (शक्तियाँ और लोग) (असहन्त) जीतते हैं, दूसरों को पराजित करते हैं (दस्यून्) बुराईयों, धूर्तताएँ आदि।

नोट :- अथर्ववेद 11.1.2 और ऋग्वेद 3.29.9 में यह मन्त्र कुछ परिवर्तनों के साथ समान है। अथर्ववेद 11.1.2 में 'अद्रोघ' अर्थात् बगावत वाली प्रवृत्ति का नहीं तथा 'अविता' अर्थात् संरक्षण के स्थान पर ऋग्वेद 3.29.9 में 'अस्रेधन्तः इतन' अर्थात् हमें उत्साह प्राप्त करवाता है या बिना बाधा के गति करवाता है। इसके अतिरिक्त अथर्ववेद 11.1.2 में 'वाचम्' अर्थात् वाणी, ज्ञान के स्थान पर ऋग्वेद 3.29.9 में 'वाजम्' अर्थात् शक्ति, बल आया है।

व्याख्या :-

अग्नि के दिव्य लक्षण क्या हैं?

इस 'अग्नि' अर्थात् ऊर्जा के अनेकों महान्, दिव्य और लाभकारी लक्षण हैं :-

1. धुंआ, कंपन एवं तरंगों का निर्माण करती है।
2. सुखों की वर्षा करती है।
3. मित्रवत (आह्वान करने वालों के लिए)।
4. जो लोग बगावत वाली प्रवृत्ति के नहीं हैं उनका संरक्षण करती है।
5. वाणी और ज्ञान के लक्ष्य की तरफ गतिमान करती है।
6. युद्धों, संघर्षों और कठिनाईयों में विजय प्राप्त करती है।
7. बहादुरी में उत्तम।
8. जिसके द्वारा सभी दिव्य (शक्तियाँ और लोग) जीतते हैं और बुराईयों, धूर्तताओं को पराजित करते हैं।

जीवन में सार्थकर्ता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हमें अपना प्रत्येक विचार और कार्य परमात्मा के प्रति समर्पित क्यों करना चाहिए?
 'अग्नि' अर्थात् ऊर्जा समूची दिव्य ब्रह्माण्ड का नेतृत्व करने में प्रथम है। इस ऊर्जा के माध्यम से ही परमात्मा हर प्राणी और हर कण में सर्वविद्यमान होते हैं। इस ऊर्जा का यज्ञ कार्यों में और परमात्मा के प्रति समर्पण में प्रयोग करना, प्रत्येक मनुष्य का सबसे महत्वपूर्ण दायित्व है। प्रत्येक विचार और प्रत्येक कार्य केवल ऊर्जा के कारण ही सम्भव होता है। अतः, प्रत्येक कार्य और विचार को उस ऊर्जा के स्रोत अर्थात् परमात्मा के प्रति ही समर्पित करना चाहिए।

ऋग्वेद 3.29.9

कृणुत धूमं वृषणः सखायोऽस्रेधन्त इतन वाजमच्छ।
 अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवा असहन्त दस्यून्॥१९॥

(कृणुत) निर्माण करता है (धूमम्) धुंआ, तरंगों, कंपन (वृषणः) सुखों की वर्षा करने वाला (सखायः) मित्र (अस्रेधन्त इतन) हमें उत्साह प्राप्त करवाता है या बिना बाधा के गति करवाता है (वाजम्) शक्ति, बल (अच्छ) लक्ष्य की तरफ गति करना (अयम्) यह (अग्नि) ऊर्जा (पृतनाषाट्) युद्धों, कठिनाईयों और संघर्षों का विजेता (सुवीरः) वीरता में उत्तम (येन) जिसके द्वारा (देवाः) दिव्य (शक्तियाँ और लोग) (असहन्त) जीतते हैं, दूसरों को पराजित करते हैं (दस्यून्) बुराईयाँ, धूर्तताएँ आदि।

नोट :- अथर्ववेद 11.1.2 और ऋग्वेद 3.29.9 में यह मन्त्र कुछ परिवर्तनों के साथ समान है। अथर्ववेद 11.1.2 में 'अद्रोघ' अर्थात् बगावत वाली प्रवृत्ति का नहीं तथा 'अविता' अर्थात् संरक्षण के स्थान पर ऋग्वेद 3.29.9 में 'अस्रेधन्तः इतन' अर्थात् हमें उत्साह प्राप्त करवाता है या बिना बाधा के गति करवाता है। इसके अतिरिक्त अथर्ववेद 11.1.2 में 'वाचम्' अर्थात् वाणी, ज्ञान के स्थान पर ऋग्वेद 3.29.9 में 'वाजम्' अर्थात् शक्ति, बल आया है।

व्याख्या :-

अग्नि के दिव्य लक्षण क्या हैं?

इस 'अग्नि' अर्थात् ऊर्जा के अनेकों महान्, दिव्य और लाभकारी लक्षण हैं :-

1. धुंआ, कंपन एवं तरंगों का निर्माण करती है।
2. सुखों की वर्षा करती है।
3. मित्रवत (आह्वान करने वालों के लिए)।
4. हमें उत्साह प्राप्त करवाता है या बिना बाधा के गति करवाता है।
5. शक्ति और बल के लक्ष्य की तरफ गतिमान करती है।
6. युद्धों, संघर्षों और कठिनाईयों में विजय प्राप्त करती है।
7. बहादुरी में उत्तम।
8. जिसके द्वारा सभी दिव्य (शक्तियाँ और लोग) जीतते हैं और बुराईयों, धूर्तताओं को पराजित करते हैं।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हमें अपना प्रत्येक विचार और कार्य परमात्मा के प्रति समर्पित क्यों करना चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



‘अग्नि’ अर्थात् ऊर्जा समूची दिव्य ब्रह्माण्ड का नेतृत्व करने में प्रथम है। इस ऊर्जा के माध्यम से ही परमात्मा हर प्राणी और हर कण में सर्वविद्यमान होते हैं। इस ऊर्जा का यज्ञ कार्यों में और परमात्मा के प्रति समर्पण में प्रयोग करना, प्रत्येक मनुष्य का सबसे महत्त्वपूर्ण दायित्व है। प्रत्येक विचार और प्रत्येक कार्य केवल ऊर्जा के कारण ही सम्भव होता है। अतः, प्रत्येक कार्य और विचार को उस ऊर्जा के स्रोत अर्थात् परमात्मा के प्रति ही समर्पित करना चाहिए।

अथर्ववेद 11.1.3

अग्नेऽजनिष्ठा महते वीर्याय ब्रह्मौदनाय पक्तवे जातवेदः।
सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वाजीजनन्नस्यै रयिं सर्ववीरं नि यच्छ॥३॥

(अग्ने) अग्नि, ऊर्जा, ताप (अजनिष्ठाः) आप पैदा हुए (महते) महान्, प्रसिद्ध (वीर्याय) वीरता के लिए, महत्त्वपूर्ण बल के लिए (ब्रह्मौदनाय) ब्रह्मण के भोजन के लिए, वैदिक ज्ञान के लिए (पक्तवे) परिपक्व करने के लिए, विकसित करने के लिए (जातवेदः) जो कुछ उत्पन्न हुआ है या पैदा किया गया है सबको जानने वाला (परमात्मा) (सप्त ऋषयो) सात ऋषि अर्थात् सन्त वृत्ति के तत्त्व – पांच स्थूल तत्त्व, अहंकार (अस्तित्व का भाव) और महत्त (ब्रह्मण्डीय बुद्धि) (भूतकृतः) कार्य करने में, निर्माण करने में सक्षम (ते) वे (त्वा) आपको (अजीजनण) जन्म लेता है, उत्पन्न करता है (अस्यै) इसको (अग्नि को) (रयिम्) सम्पदा, व्यक्त प्रकृति (सर्ववीरम्) पूरी बहादुरी के साथ (नि यच्छ) लगातार लक्ष्य की तरफ गति करता है।

व्याख्या :-

‘अग्नि’ किस उद्देश्य से पैदा हुई?

‘अग्नि’, आग, ऊर्जा, ताप! आप महान्, प्रसिद्ध बहादुरी और महत्त्वपूर्ण बल के लिए पैदा हुए हो; आप ब्रह्म के भोजन अर्थात् ज्ञान को पकाने के लिए, विकसित करने के लिए हो।

सात ऋषि अर्थात् सन्त वृत्ति के तत्त्व – पांच स्थूल तत्त्व, अहंकार (अस्तित्व का भाव) और महत्त (ब्रह्मण्डीय बुद्धि), जो कार्य करने और निर्माण करने में सक्षम थे, उन्होंने आपको जन्म दिया और आपका निर्माण किया। इसको (अग्नि को) पूरी बहादुरी के साथ (यज्ञ कार्यों के लिए) सम्पदा और व्यक्त भौतिक प्रकृति दो, जिससे वह ‘अग्नि’ अपने लक्ष्य अर्थात् जातवेदाः, परमात्मा, की तरफ लगातार गति कर सके जो सब उत्पन्न हुआ को जानता है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

सृष्टि निर्माण की क्या प्रक्रिया है?

मनुष्यों का लक्ष्य क्या है?

मनुष्यों को अपने लक्ष्य की तरफ किस प्रकार अग्रसर होना चाहिए?

सभी दिव्यताओं की मातृशक्ति, अदिति, परमात्मा का एक गुण है जिसके द्वारा भगवान का भोजन अर्थात् वैदिक ज्ञान उत्पन्न किया गया। अतः सात ऋषियों की शक्ति से अग्नि की अभिव्यक्ति मनुष्यों, अन्य प्राणियों तथा सारी भौतिक प्रकृति के रूप में हुई जिसे रयिम् कहा जाता है।

अतः सभी मनुष्यों से यह अपेक्षित है कि वे निम्न लक्षणों को धारण करते हुए अपने गन्तव्य अर्थात् परमात्मा की तरफ गतिमान रहें :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



1. महत्त्वपूर्ण बल का विकास करें और उसका संरक्षण करें।
2. परमात्मा के भोजन अर्थात् ब्रह्मौदनं, वैदिक ज्ञान को परिपक्व करें।
3. इस भौतिक सृष्टि की प्रत्येक सम्पदा का यज्ञ कार्यों के लिए प्रयोग करें।

अथर्ववेद 11.1.4

समिद्धो अग्ने समिधा समिध्यस्व विद्वान्देवान्यज्ञियाँ एह वक्षः।
तेभ्यो हविः श्रपयं जातवेद उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् ॥4॥

(समिद्धः) ज्वलन्त, प्रकाशित (अग्ने) अग्नि, ऊर्जा, ताप (समिधा) जलने के लिए पदार्थ, तपस्या करने के लिए शरीर (समिध्यस्व) उचित प्रकार से जलने और प्रकाशित होने के लिए (विद्वान्) दिव्य ज्ञान को जानने वाला (देवान्) दिव्य (शक्तियाँ और लोग) (यज्ञियान्) सम्मान और पूजा के योग्य (इह) यहाँ, इस जीवन में (आवक्षः) लाते हो (तेभ्यः) उनके लिए (हविः) आहुतियाँ (त्याग के लिए) (श्रपयम्) परिपक्व करते हुए (जातवेदः) सब कुछ पैदा हुआ और उत्पन्न हुआ को जानने वाला (उत्तमम्) श्रेष्ठतम् (नाकम्) बिना दर्द, यातनाओं के बिना अर्थात् आनन्द में (अधि रोहय) ऊपर की तरफ प्रगति करने के योग्य बनाना (इमम्) उसको।

व्याख्या :-

तपस्याओं और यज्ञ कार्यों का क्या परिणाम होता है?

साधक और समर्पित लोग कहाँ पहुँचते हैं?

‘अग्ने’, महत्त्वपूर्ण ऊर्जा (मनुष्यों में विद्यमान) इस शरीर को प्रकाशित करो (तपस्याओं से) और प्रकाशित करो (परमात्मा के प्रकाश से) या पदार्थों को जलाओ (अग्नि यज्ञों में) उन्हें उचित प्रकार से जलाने के लिए।

दिव्य ज्ञान के जानने वाले, दिव्य (शक्तियाँ और लोग), पूजा और सम्मान के योग्य, को यहाँ इस जीवन में लाओ।

जातवेदाः अर्थात् सब पैदा हुआ को जानने वाला, सभी आहुतियों और तपस्याओं को ऐसे श्रद्धालु भक्तों के लिए परिपक्व करता है और उन्हें किसी दर्द या दुःखों के बिना अर्थात् आनन्द पूर्वक ऊँचे श्रेष्ठ मार्ग की तरफ प्रगति करवाता है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

यज्ञ किस प्रकार बहुआयामी धार्मिक परम्परा है?

आनन्द के लिए प्रगति करने हेतु और परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति के लिए तपस्याओं का जीवन, यज्ञ कार्य, दृढ़ और परिपक्व आहुतियाँ अत्यन्त आवश्यक कार्य हैं।

पवित्र अग्नि में आहुतियाँ देना सांकेतिक यज्ञ है जो भारत में व्यापक रूप से स्वीकृत धार्मिक परम्परा के रूप में मान्य है। अग्नि यज्ञ के द्वारा वातावरण के प्रदूषण को दूर करने में महान् वैज्ञानिक परिणाम प्राप्त होते हैं। इसमें प्रकृति के पांच स्थूल तत्त्वों सहित दिव्य (शक्तियों और लोगों) का आह्वान और सम्मान किया जाता है। पृथ्वी, जल, वायु आदि वैदिक देवता हैं जिन्हें अग्नि यज्ञ की प्रक्रिया से पवित्र करने की परम्परा है, जिससे अन्ततः हमारा ही कल्याण होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



इस प्रकार यज्ञ बहुआयामी परिणाम उत्पन्न करते हैं और यह पूर्ण पवित्रीकरण का विज्ञान है :-
भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक।

अथर्ववेद 11.1.5

त्रेधा भागो निहितो यः पुरा वो देवानां पितॄणां मर्त्यानाम्।
अंशांजानीध्वं वि भजामि तान्चो यो देवानां स इमां पारयाति ॥५॥

(त्रेधा) तीन प्रकार से (भागः) भाग, हिस्से (निहितः) स्थापित हैं (यः) वह (पुरा) प्राचीन, पूर्वकाल से (वः) तुम्हारे लिए (देवानाम्) दिव्य (शक्तियों और लोगों के लिए) (पितॄणाम्) पुरुषों के लिए (मर्त्यानाम्) मरने वाले मनुष्यों के लिए (अंशान्) इससे (जानीध्वम्) आप जानते हो (वि भजामि) विशेष रूप से भाग करना, बांटना (तान्) वे (वः) तुम्हारे लिए (यः) जो (देवानाम्) दिव्य (शक्तियों और लोगों) का (सः) वह (इमाम्) इस (लोगों को, इस जीवन को) (पारयाति) पार करने में सहायता करता है।

व्याख्या :-

यज्ञ का भाग किस प्रकार स्थापित होता है?

यज्ञ का कौन सा भाग अन्ततः मुक्ति के लिए लाभदायक है?

वह भाग (यज्ञ का, सृष्टि का) तीन में अर्थात् तीन प्रकार से स्थापित होता है :-

1. देवानाम् अर्थात् दिव्य (शक्तियों और लोगों) का,
2. पितॄणाम् अर्थात् पुरुषों के लिए,
3. मर्त्यानाम् अर्थात् मरने वाले मनुष्यों के लिए।

तुम उन भागों को जानते हो जो परमात्मा और यज्ञ करने वाला तुम्हारे लिए विशेष रूप से भाग का बंटवारा करता है। जो दिव्य (शक्तियों और लोगों) के लिए है। इस वर्तमान जीवन को सांसारिक समुद्र पार करने में सहायता कर सकता है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

यज्ञ के तीन लाभ कौन से हैं?

कौन से तीन प्रकार के लोग हैं जो यज्ञ करते हैं?

(क) ब्रह्माण्डीय यज्ञ से व्यक्तिगत यज्ञ तक, सभी यज्ञ कार्यों का लाभ तीन प्रकार से बंटता है - (1) देवपूजा अर्थात् दिव्य (शक्तियों और लोगों) का सम्मान और पूजा, (2) संगतिकरण अर्थात् समान स्तर के लोगों का संगठन और (3) दान अर्थात् परमार्थ के लिए दान।

(ख) यज्ञ के भाग हमारे व्यक्तिगत अस्तित्व के साथ समूचे ब्रह्माण्ड के तीन स्तरों के लिए लाभकारी होते हैं :- (1) भौतिक, (2) मानसिक और (3) आध्यात्मिक।

(ग) इसी प्रकार यज्ञ का भाग प्रकृति के तीनों गुणों के लिए होता है - (1) सत्त्व अर्थात् शुद्धता, (2) रजस अर्थात् सक्रियता और (3) तमस अर्थात् आलस्य, अन्धकार, जड़ता।

(घ) यज्ञ का भाग जीवन की तीनों अवस्थाओं के लिए उपलब्ध होता है - (1) जागृत, (2) स्वप्न तथा (3) सुषुप्ति।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(ङ) यज्ञ का भाग परमात्मा की अनुभूति के तीनों मार्गों में सहायता करता है – (1) ज्ञान मार्ग अर्थात् दिव्य ज्ञान का मार्ग, (2) कर्म मार्ग अर्थात् निःस्वार्थ कर्मों का मार्ग तथा (3) उपासना मार्ग अर्थात् भक्ति और समर्पण का मार्ग।

(च) यज्ञ का भाग प्रत्येक अणु के तीनों अंगों तक पहुँचता है – (1) इलेक्ट्रॉन अर्थात् तटस्थ प्रभाव, (2) प्रोटोन अर्थात् सकारात्मक प्रभाव और (3) न्यूट्रॉन अर्थात् नकारात्मक प्रभाव।

(छ) यज्ञ का भाग दृश्यमान त्रैतवाद के तीनों अंगों तक पहुँचता है – (1) ईश्वर अर्थात् परमात्मा, (2) जीवात्मा और (3) प्रकृति।

दूसरी तरफ तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं – (1) देवता अर्थात् दिव्य विद्वान् तथा बिना किसी स्वार्थ के देने वाले, (2) मानव अर्थात् सामान्य मनुष्य, भोक्ता, अपने-अपने हितों का ध्यान रखने वाले और (3) राक्षस अर्थात् आसुरी लोग जो संग्रहण के लिए दूसरों के अधिकार और सम्पदाओं को लूटते हैं तथा दूसरों की शांति भंग करते हैं।

यह मन्त्र यज्ञ के तीन भागों को घोषित करता है – (1) दिव्यताओं के लिए, (2) पूर्वजों के लिए और (3) मनुष्यों के लिए।

सामान्यतः मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ब्रह्माण्डीय यज्ञ में से लाभ प्राप्त करने की कामना करते हैं। यह तीसरा और न्यूनतम स्तर है।

सभी यज्ञ कार्यों में से एक भाग हमारे पूर्वजों को जाता है अर्थात् हमारे वर्तमान अस्तित्व से जुड़ी हुई श्रृंखला जो सर्वोच्च वास्तविकता अर्थात् ऋत तक पहुँचती है। इस प्रकार यज्ञ कार्यों से हम अपने पूर्वजों के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त कर सकते हैं।

यज्ञ का सर्वोच्च स्तर है उसे दिव्य शक्तियों और लोगों की तरह सम्पन्न करना, जिसमें यज्ञ करने वाला व्यक्ति न तो किसी इच्छा पूर्ति की कामना करता है और न ही उसमें कर्त्ता का भाव रहता है। ऐसा महान् और दिव्य यज्ञ कर्त्ता को दिव्य श्रेणी में स्थापित कर देता है। ऐसा समर्पित यज्ञ कर्त्ता मुक्ति प्राप्त करने के लिए सांसारिक समुद्र को पार करने में सफल हो जाता है।

हर वस्तु और हर जीव के अस्तित्व के तीन स्तर हैं अर्थात् शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक। ब्रह्माण्ड का प्रत्येक कार्य इन सभी तीन स्तरों पर प्रभाव डालता है।

सूक्ति :- (त्रेधा भागः निहितः वि भजामि – अथर्ववेद 11.1.5) वह भाग (यज्ञ का, सृष्टि का) तीन में अर्थात् तीन प्रकार से स्थापित होता है और विशेष रूप से विभाजित होता है।

This file is incomplete/under construction